

# सनेहलीला

अर्थात्

श्रीउद्धवजी का वृज में जाना और नन्द  
यशोदा तथा गोपिकाओं के प्रति श्री  
आनन्दकन्द कृष्णचन्द्र का संदेसा  
कहना और उनलोगों का अपूर्व  
प्रेमदर्शन ।

---

(ग्रन्थकार का नाम नहीं मिला)

---

जिसे यह पुस्तक लेना हो काशी भारत-  
जीवनसंस्थान के बाबू रामकृष्णवर्मा  
को पत्र लिखे ।

---

काशी

भारतजीवन संस्थान में मुद्रित हुई ।

---

सन् १९४८ ।